बेनिटो जुआरेज

आधुनिक मेक्सिको के हीरो

दिन का पहला प्रकाश मैक्सिको के सिएरा डेल सुर पहाड़ों पर दिखाई दिया। मार्सेलिनो और ब्रिगेडा जुआरेज के घर को छोड़कर, सैन पाब्लो गुआलताओ गांव के सभी लोग अभी सो रहे थे। पर उस घर में हर कोई जगा था। वे एक महत्वपूर्ण घटना की तैयारी कर रहे थे। जुआरेज के एक दिन के बेटे का, उसी दिन दोपहर को ईसाई पद्दति द्वारा नामकरण होना था। यह बात 22 मार्च 1806 की थी. उस बच्चे का नाम बेनिटो पाब्लो पड़ा।

सब कुछ तैयार था। सीनियर जुआरेज सो रहे बच्चे को लेकर दरवाजे पर खड़े थे। मारिया जोसफा और रोजा ने अपने नए भाई को चूमा। सेनोरा जुआरेज़ ने अपने बेटे के नरम गाल पर हाथ फेरा। "हम आपके लौटने का इंतजार करेंगे," उसने अपने पति से कहा। "ईश्वर आप पर कृपा करे।" उस दोपहर बेनिटो पाब्लो जुआरेज का सेंटो टॉमस इक्स्लान के छोटे से गाँव के चर्च में नामकरण हुआ। परिवार के पास जश्न मनाने के लिए या नए बच्चे के लिए कंबल खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे। सीनेटर जुआरेज के पास जो सिक्के थे वे उन्होंने नामकरण करने वाले पुजारी को दे दिए।

जुआरेज परिवार ने खुद को भाग्यशाली महसूस किया कि वे अपने नवजात शिशु के लिए कम-से-कम इतना तो कर पाए। उनके गाँव के बाकी बीस परिवारों के पास तो बिल्कुल भी पैसे नहीं थे। सैन पाब्लो गुआलताओ में हर किसी का जीवन गरीबी, भुखमरी और बीमारी के खिलाफ एक निरंतर संघर्ष था।

जुआरेज़ परिवार, अपने पड़ोसियों की तरह, ज़ेपोटेक इंडियंस थे। उनके पूर्वज हजारों वर्षों से दक्षिणी मैक्सिको के पहाड़ों में रहते आये थे। वे शांतिप्रिय, परिश्रमी लोग थे जो खेती करते थे और भेड़ें पालते थे। जब एज़्टेक ने बारहवीं शताब्दी में मेक्सिक पर आक्रमण किया, तो उन्हें ज़ापोटेक लोगों को जीतना मुश्किल लगा। और जब सोलहवीं शताब्दी में स्पैनिश सेना ने मेक्सिको पर आक्रमण किया, तो उन्हें भी ज़ापोटेक लोगों के उसी जिद्दी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

वैसे जैपोटेक लोग आक्रामक नहीं थे। उन्होंने अन्य लोगों पर कभी भी आक्रमण नहीं किया। उन्होंने बस अपनी जमीन का बचाव किया, और कभी हार नहीं मानी। बेनिटो जुआरेज का जन्म ऐसे ही गर्वशाली, शांत और जीवित रहने की प्रबल इच्छा वाली परंपरा में हुआ था। यही वो परंपरा थी जिसने उनके जीवन को आकार दिया। बाद में जुआरेज ने आधुनिक मेक्सिको को भी एक नया स्वरुप दिया।

शुरुआत से ही, बेनिटो के लिए जीवन कठिन था। बड़े होकर उन्होंने लिखा, "यह मेरा दुर्भाग्य था कि मैं अपने माता-पिता को नहीं जान पाया। क्योंकि जब मैं तीन साल का था तभी दोनों माँ-बाप का देहांत हो गया। फिर मुझे और मेरी बहनों को दादा-दादी, पेड्रो पेरेज और जस्टा लोपेज के पास रहने के लिए भेज दिया गया। वे भी जैपोटेक राष्ट्र के थे।"

बेनिटो की मां का दूसरे बच्चे को जन्म देते हुए देहांत हुआ। सैन पाब्लो गुआलताओ में कोई डॉक्टर या नर्स नहीं थे। उनके पिता अपने बगीचे में उगाए फलों को लेकर अपने गाँव से चालीस मील पहाड़ी रास्ते पर चलने के बाद ओक्साका शहर के एक बाज़ार में गिरकर मर गए। जब उनकी मृत्यु हुई तब सेनोर और सेनोरा जुआरेज तीस वर्ष के भी नहीं थे।

जब बेनिटो छह साल के थे, तब उनके दादा-दादी की भी मौत हो गई। अब तीनों जुआरेज बच्चे, फिर से बेघर हो गए। मारिया जोसेफा, नौकरानी का काम करने के लिए ओक्साका गई। रोजा, जो किशोरावस्था में थी, शादी करके पास के ही एक गाँव में चली गई।

बेनिटो को उसके चाचा बर्नार्डिनो के पास रखा गया। बर्नार्डिनो जुआरेज़ के पास पहाड़ों में ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा था। वो लगुना एन्कंटाडा "मंत्रमुग्ध झील” के पास था। नाम के बावजूद, वहां कुछ भी सुंदरता नहीं थी। वो एक चट्टानी और बंजर इलाका था, जहाँ अंकल बर्नार्डिनो की भेड़ों के झुंड के चरने के लिए मुश्किल से पर्याप्त घास उगती थी। बेनिटो तुरंत घर के कामकाज में मदद करने लगा। उसने घर का काम किया, पास के एक झरने से पानी ढोया, और अपने चाचा की भेड़ों को चराने में मदद की।

बेनिटो को केवल ज़ेपोटेक भाषा ही बोलनी आती थी। परिवार और दोस्तों के साथ बात करने के लिए वो ठीक थी। लेकिन मेक्सिको की आधिकारिक भाषा स्पेनिश थी। स्पेनिश जाने बिना, कोई वहां व्यक्ति एक गरीब किसान होने के अलावा और कुछ भी नहीं बन सकता था। लेकिन ज़पोटेक के किसी भी गाँव में स्कूल नहीं थे। शिक्षा के अभाव में किसी के लिए भी गरीबी की उन जंजीरों को तोड़ना लगभग असंभव था।

"हमारे लोग इस भूमि में हजारों वर्षों से रहे हैं," चाचा बर्नार्डिनो ने लड़के से कहा। "कोई अवसर नहीं मिलने के कारण हम गरीब बने रहते हैं। तुम समझदार हो, और तेजी से सीखते हो। ईश्वर ने तुम्हें जो दिया है तुम्हें उसका उपयोग करना चाहिए और अपने जीवन को बेहतर बनाना चाहिए। तुम्हें स्पेनिश सीखना चाहिए। तुम्हें पढ़ना-लिखना सीखना चाहिए। तुम कुछ ख़ास बन सकते हो, बेनिटो। अपने जीवन को एक गरीब अशिक्षित व्यक्ति के रूप में मत जिओ!"
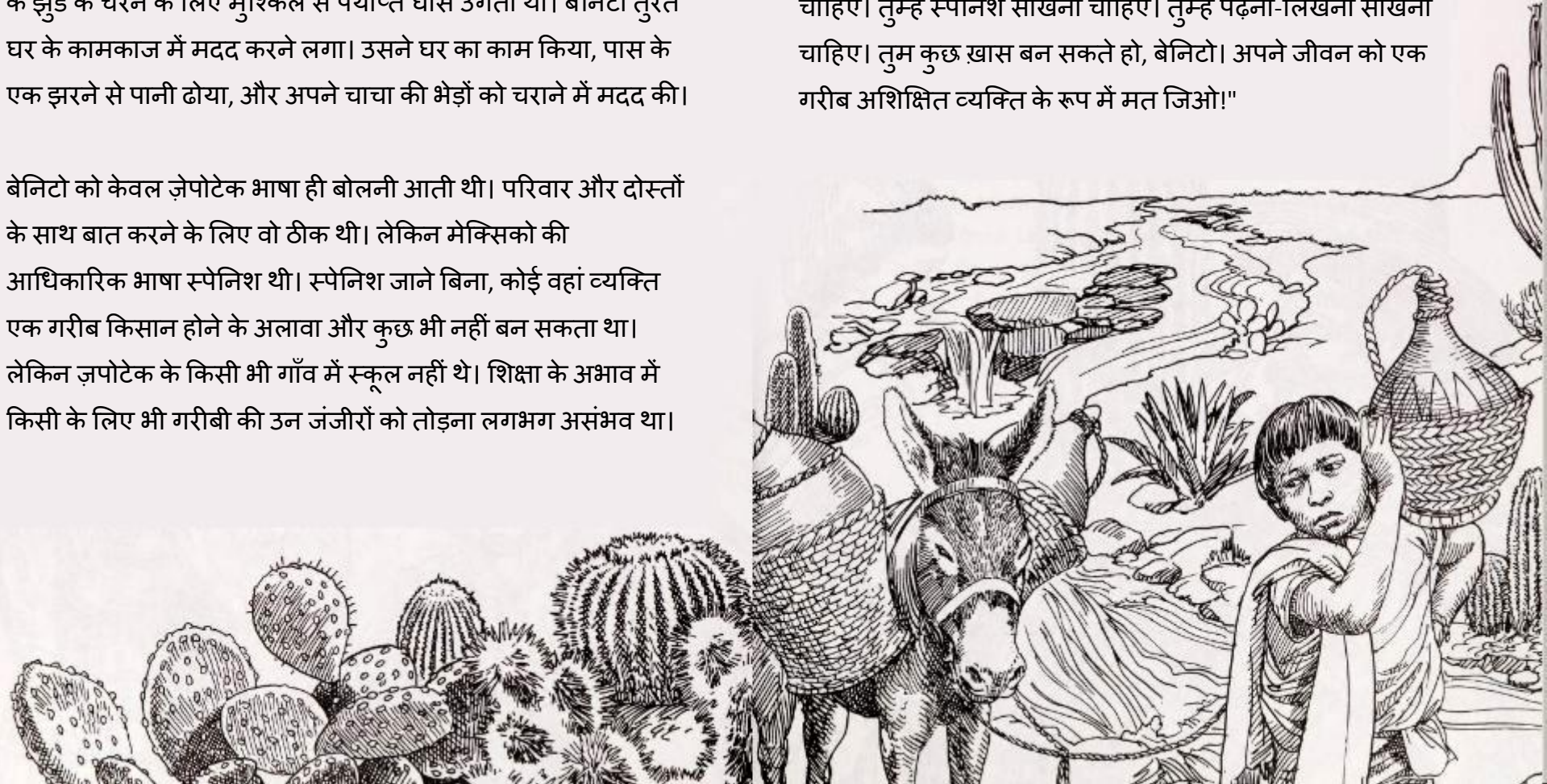
बर्नार्डिनो जुआरेज चाहते थे कि बेनिटो एक पुजारी बने। गरीब ज़ेपोटेक लड़के के लिए दुनिया में आगे बढ़ने का यही सबसे अच्छा तरीका था। लेकिन पुजारी होने के लिए, लड़के को एक धार्मिक स्कूल में जाना होगा। और धार्मिक स्कूल में दाखिले के लिए, बेनिटो को स्पेनिश सीखनी होगी।

चाचा बर्नार्डिनो थोड़ी बहुत स्पेनिश जानते थे, और उन्होंने अपने भतीजे को उसे सिखाने की कोशिश भी की। बेनिटो सीखना चाहता था। लेकिन यह काम आसान नहीं था। वहां ज़िंदा रहने के लिए ही उन्हें हमेशा श्रम करना पड़ता था। परिवार की जरूरत की हर चीज उन्हें खुद अपने ही हाथों से बनानी पड़ती थी। वो खुद अपना कपड़ा बनाते। भेड़ों के ऊन से वो धागा बनाते। ऊन भी उन्हें अपनी भेड़ों से ही काटना पड़ता था.

जुआरेज के भोजन का हर अंश - केले, कांटेदार नाशपाती, भूरी सेम, आलू, चने सभी को वो अपने बगीचे में उगाते। वे मेहनत करके खुद के लिए आटा पीसते थे। वो अपने ही मधुमक्खियों के छत्तों से शहद निकालते थे। वो कुछ भी नहीं खरीदते थे, यहां तक कि वे खेती के सभी औज़ार भी खुद ही बनाते थे।

बेनिटो जुआरेज अपने बचपन के कठिन जीवन को कभी नहीं भूल पाया। किसी साल फसल नष्ट हो जाती। वो साल उनके लिए बहुत कठिन होता। तब परिवार मैगुए नामक कैक्टस के पौधे खाकर जीवित रहता। वो कैक्टस पहाड़ों पर उगते थे। मैगुए से निकलने वाला दूध, चीनी के घोल की तरह मीठा होता था। मीठा होने के कारण वो शरीर को पोषण देता था।

जुआरेज, मैगुए के दूध को पीते और बाकी पौधे का भी पूरी तरह इस्तेमाल करते। उसके तंतुओं (फाइबर) से वे पीता नाम का धागा बनाते। पीता से वे मजबूत कपड़ा और कागज बनाते। यहां तक कि वे मैगुए के कांटे भी नहीं फेंकते। काँटों को वे पिनों, सुइयों और कीलों जैसे उपयोग करते।

युवा बेनिटो अपने परिवार के साथ दिन भर काम करता, मेहनत करता। स्पेनिश, या कुछ और सीखने के लिए उसके पास समय ही नहीं बचता। बार-बार, बर्नार्डिनो अपने भतीजे से कहता, "मेरी सबसे बड़ी इच्छा है कि तुम स्कूल जाओ, और इस कठिन जीवन से बचो। शायद एक दिन यह संभव होगा।"

लेकिन "वो दिन" बेनिटो को बहुत दूर लग रहा था। जब वह दस साल का था, तो उसने चाचा के भेड़-बकरियों के झुंड के ज़िम्मेदारी संभाली। वो पूरे दिन झील के पास भेड़-बकरियों को देखता था। बेनिटो अकेला और दुखी रहता था। वो भेड़ों से बातें करके और बेहतर जीवन के सपने देखकर अपना समय गुजारता था।

बेनिटो को गरीबी से बचने और अपने जीवन में कुछ बनने का केवल एक ही रास्ता दिखा। उसने कई साल बाद लिखा, "जो पिता अपने बच्चों की स्कूली शिक्षा का खर्च उठा सकते थे, वे उन्हें उसके लिए ओक्साका शहर ले जाते थे। जो लोग खर्चा नहीं उठा सकते थे, वे बच्चों को इस शर्त पर निजी घरों में नौकर लगवा देते थे कि उन्हें पढ़ाया जाए। पढ़ना-लिखना सीखने, शिक्षा का बस यही एकमात्र रास्ता था। केवल मेरे गाँव में ही नहीं, बल्कि यह तरीका पूरे इक्स्लान जिले में प्रचलित था।"
"उस समय शहर के घरों में अधिकांश नौकर उस जिले के युवा लोग ही थे। इन तथ्यों के कारण ... मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि केवल शहर में जाकर ही मैं कुछ सीख सकता था। इसलिए मैं अक्सर चाचा से मुझे राजधानी ले जाने की विनती करता था।"

चाचा बर्नार्डिनो हमेशा ऐसा करने का वादा करते थे। लेकिन वो दिन कभी नहीं आता था। फिर एक दिन, सब कुछ बदल गया।

16 दिसंबर, 1818 का दिन था। बारह वर्षीय बेनिटो, भेड़ों के झुंड की पहाड़ी पर देखभाल कर रहा था। उस दिन लगभग ग्यारह बजे, खच्चर-चालकों का एक समूह वहां से गुजरा। बेनिटो ने उनसे पूछा कि क्या वे ओक्साका से आए थे। उन्होंने हाँ में उत्तर दिया। लड़के ने उनसे बड़े शहर के बारे में कई सवाल पूछे। खच्चर-चालकों ने उसे शहर के लोगों, इमारतों और वहां की सभी भव्य चीजों की अद्भुत कहानियाँ सुनाईं। फिर वे अपनी यात्रा पर आगे चले गए।

जब बेनिटो भेड़ों के झुंड में वापस गया, तो उसकी एक भेड़ गायब थी। उसने पथरीले रास्तों में खोई हुई भेड़ की बहुत तलाश की। फिर, जैसा कि उसने लिखा था, "एक और चरवाहे लड़के ने मुझे बताया कि उसने एक खच्चर-चालक को भेड़ के साथ भागते हुए देखा था।"

बेनिटो को उन बातूनी पुरुषों ने अच्छा बेवकूफ बनाया था। एक मूल्यवान जानवर को खोने के लिए उसने खुद को दोषी महसूस किया। चाचा बर्नार्डिनो के पास बहुत कम साधन थे, लेकिन उनके पास जो भी था वे उसे बेनिटो के साथ ख़ुशी से बांटते थे। उन्होंने हमेशा बेनिटो को अपने बेटे की तरह ही माना। बेनिटो को सजा का भी डर था। जब वो पहाड़ी के किनारे पर बैठा तो वो भयभीत था। फिर बेनिटो ने वहां से भागने का फैसला किया। सूर्यास्त के बाद वो झुंड को घर वापिस लेकर आया। पर अब उसके दिमाग में एक साफ़ योजना थी।

अगली सुबह भोर के समय, बेनिटो अपने चाचा के घर से बाहर निकला और ओक्साका की ओर चलने लगा। चालीस मील की दूरी तय करने में उसे पूरा दिन लग गया। आखिरकार जब वो शहर पहुँचा, तो वो भूखा-प्यासा और थका हुआ था। वहां उसने डॉन एंटोनियो माज़ा के घर की तलाश की। मारिया जोसेफा, बेनिटो की बड़ी बहन, वहाँ खाना पकाती थी। वो एकमात्र इंसान थी जिसे बेनिटो पूरे शहर में जानता था। उसे अपनी बहिन को ढूंढना ही था।

आखिर में बेनिटो को माज़ा का घर मिला। उसने अपनी बहन को पूरी बात बताई। फिर बहिन ने डॉन एंटोनियो के सामने अपने भाई की कहानी दोहराई, और पूछा कि क्या बेनिटो वहां रह सकता था? "मेरा भाई मेहनती है और सब काम करने को तैयार है," मारिया जोसफा ने कहा। "वह ओक्साका में रहना चाहता है। वह स्कूल भी जाना चाहता है। क्या आप हमारी मदद करेंगे?"

डॉन एंटोनियो ने बेनिटो को स्थायी जगह न मिलने तक अपने घर में रहने की सहमति दी। बेनिटो ने माज़ा परिवार के लिए छोटे-मोटे काम करके अपनी कमाई अर्जित की। जब वह काम नहीं कर रहा होता, तो वो ओक्साका की सड़कों पर घूमता था। वो लोगों को सुनता, देखता और उनसे सीखता था।

उसके गांव की तुलना में ओक्साका की इमारतें और बगीचे कहीं अधिक सुंदर थे। वहां के बाज़ारों में अंतहीन किस्मों के सब्ज़ियां, फल, मीट, फर्नीचर और अन्य सामान बिकता था। वहां रईस लोग महंगे कपड़े पहनकर अपनी घोड़ागाड़ियों में सवारी करते थे।

ओक्साका के आने से पहले, बेनिटो ने केवल छोटे गाँवों में रहने वाले गरीब ज़ियोटेक भारतीयों को ही देखा था। अब उसने पहली बार मैक्सिको के अन्य हिस्से भी देखे। उसने देखा कि मेक्सिको एक क्रूर तरीके से शासित था, जहाँ ज़्यादातर लोगों के साथ अन्याय होता था। मेक्सिको के आधे लोग मूल-अमेरिकी इंडियंस थे और वे जैपोटेक की तरह ही थे। लेकिन उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता था। मेक्सिको के मूल-अमेरिकी इंडियंस को कानून के तहत कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं था। उनके पास न तो कोई शिक्षा थी और न ही अपने जीवन को बेहतर बनाने का कोई अवसर।

मेक्सिको के अगले सबसे बड़े समूह को मेस्टिज़ो कहा जाता था। मेस्टिज़ोस, आधे मूल-अमेरिकी और आधे स्पेनिश थे। मेस्टिज़ोस के साथ मूल अमेरिकियों की तुलना में बेहतर व्यवहार किया जाता था। लेकिन मेक्सिको के संचालन में उनकी भी कोई आवाज नहीं थी।

इसके बाद लोगों का एक छोटा समूह था, जिसे क्रेओल्स कहा जाता था। क्रेओल्स स्पेनिश लोगों के वंशज थे, लेकिन वे मैक्सिको में पैदा हुए थे।

मेक्सिको में सबसे छोटा समूह उन लोगों का था जो स्पेन में पैदा हुए थे। यही लोग मेक्सिको पर शासन करते थे, और उनके पास किसी अन्य समूह की तुलना में अधिक कानूनी अधिकार थे। मैक्सिकन कानून बहुत अनुचित थे। स्पेनिश माता-पिता के मेक्सिको में पैदा हुए बच्चों के पास अपने पालकों की तुलना में कम अधिकार थे। इस कारण से, कानून अक्सर बच्चों और उनके माता-पिता को एक-दूसरे का दुश्मन बना देता था।
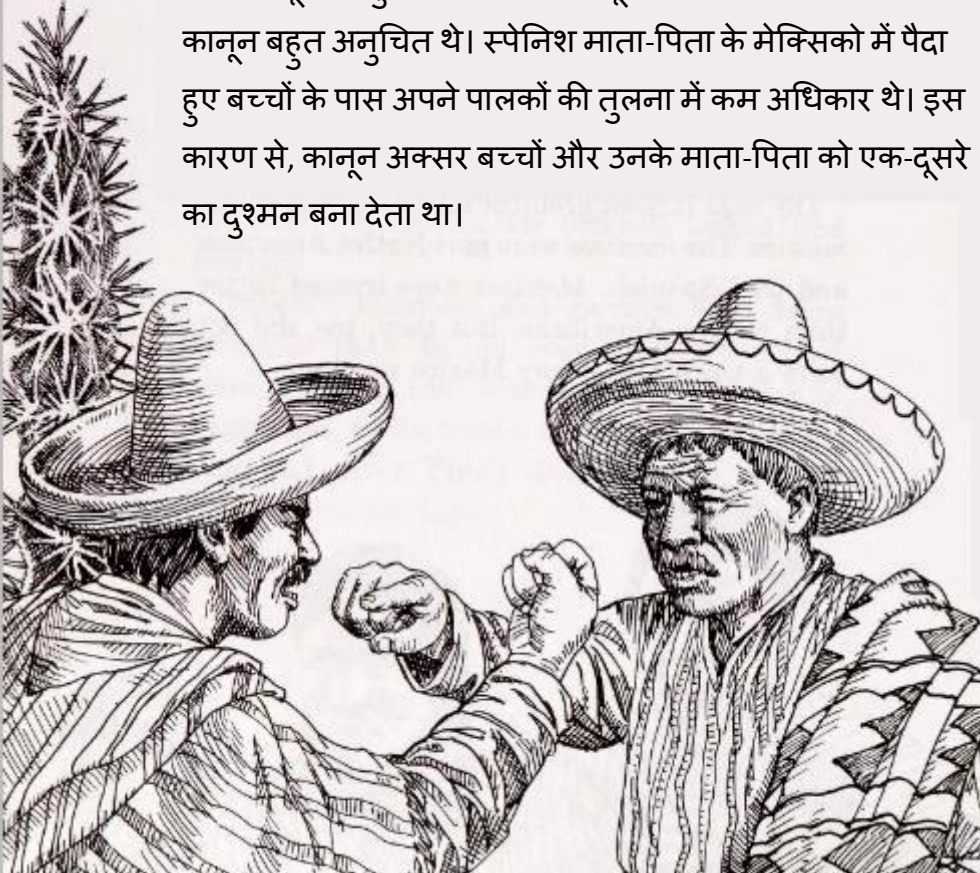
जब बेनिटो एक लड़का था, तब मेक्सिको, स्पेन का एक उपनिवेश था। कई मेक्सिकोवासियों को स्पेन से उसी तरह नफरत थी, जैसे कभी अमरीका के लोगों को इंग्लैंड के शासन से नफरत थी। अमरीका के लोगों ने 1776 में इंग्लैंड से अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी, और उसके संयुक्त राज्य अमेरिका बना। स्पेन के कठोर शासन से पीड़ित, मैक्सिकन लोग भी उसी स्वतंत्रता के लिए तरस रहे थे।

स्पेन ने सख्त कानूनों की पकड़ द्वारा मेक्सिको पर अपना अंकुश कायम रखा था। मेक्सिको के लोगों को कुछ भी बनाने या विकसित करने की अनुमति नहीं थी। इसका मतलब था कि मशीनें, कपड़ा, औजार और कई अन्य निर्मित सामान स्पेन से ही खरीदे जाते थे। मैक्सिको की कई निषिद्ध फसलों में - सन (फ्लैक्स) और हेम्प (कपड़ा और रस्सी बनाने के लिए उपयोग किया जाता है) से कुछ भी उत्पादन करने की अनुमति नहीं थी। मेक्सिको के लोगों को अंगूर उगाने की अनुमति नहीं थी. उन्हें शहतूत के पेड़ों को उगाने की इजाज़त भी नहीं थी. रेशम के कीड़े शहतूत के पत्ते खाते थे और फिर उससे रेशम बनाते थे। मेक्सिको की सबसे बड़ी दौलत थी वहां के पहाड़ों में सोने और चांदी का अयस्क। स्पेन के राजाओं के अपने खजाने को भरने के लिए मेक्सिको से लाखों टन सोना-चांदी स्पेन भेजा।

इस सोने और चांदी के बदले में मेक्सिको को कुछ नहीं मिला। वैसे देश में कानूनी गुलामी नहीं थी, लेकिन ज्यादातर मैक्सिकन गुलामों की तरह ही रहते थे। इससे देश में बढ़ते गुस्से को हवा मिली। जब 1818 में बेनिटो जुआरेज़ ओक्साका पहुँचे, तब तक सरकार के खिलाफ दो विद्रोह हो चुके थे। दोनों को सेना द्वारा कुचल दिया गया था, लेकिन इससे शासकों के खिलाफ लोगों का रोष और गहरा हुआ।
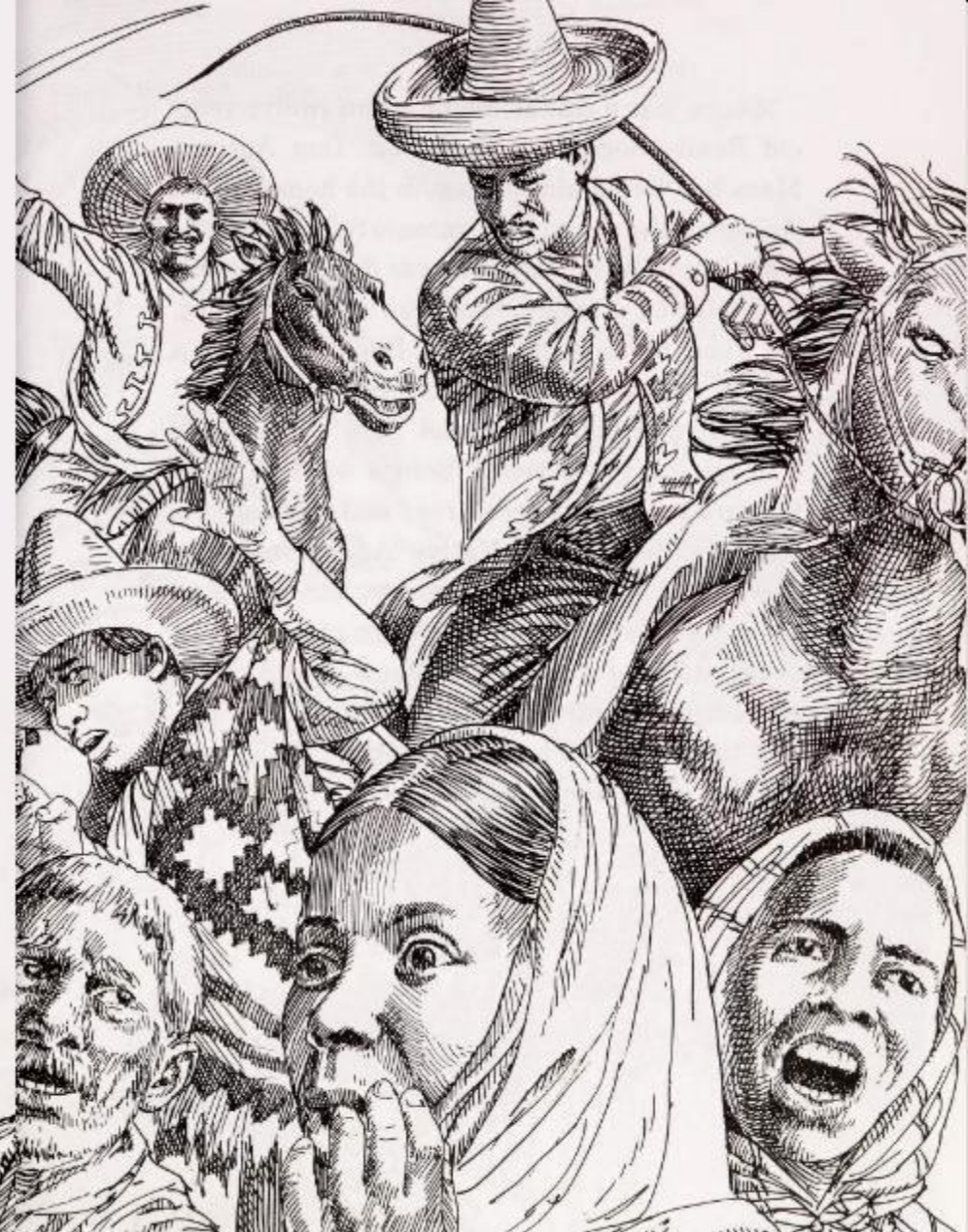
जब बारह वर्षीय बेनिटो ने अपनी शिक्षा शुरू की तो मेक्सिको एक मुश्किल दौर से गुज़र रहा था। डॉन एंटोनियो माज़ा ने बेनिटो को, डॉन एंटोनियो सालानुएवा के घर में रखवा दिया। डॉन एंटोनियो सालानुएवा एक दयालु और बुद्धिमान व्यक्ति थे। वो एक धार्मिक व्यक्ति थे और शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण समझते थे। इसलिए जब उनके नए नौकर, बेनिटो ने सीखने की तीव्र इच्छा दिखाई, तो डॉन एंटोनियो ने उसे प्राथमिक विद्यालय में दाखिला दिलाया।

अगले दो वर्षों में, बेनिटो ने चार ग्रेड पास किये। उसने सरल स्पेनिश पढ़ना और लिखना सीखी। मूल-अमेरिकियों को स्कूलों में सिर्फ बुनियादी विषयों को पढ़ने की अनुमति दी गई थी, लेकिन इससे अधिक नहीं। बेनिटो और अधिक सीखना चाहता था, इसलिए उसने किसी बेहतर स्कूल में जाने की भीख माँगी। डॉन एंटोनियो उससे सहमत हुए। वह चाहते थे कि बेनिटो एक पुजारी (प्रीस्ट) बने, पर उसके लिए एक अच्छी शिक्षा की आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने बेनिटो को रॉयल स्कूल भेज दिया।
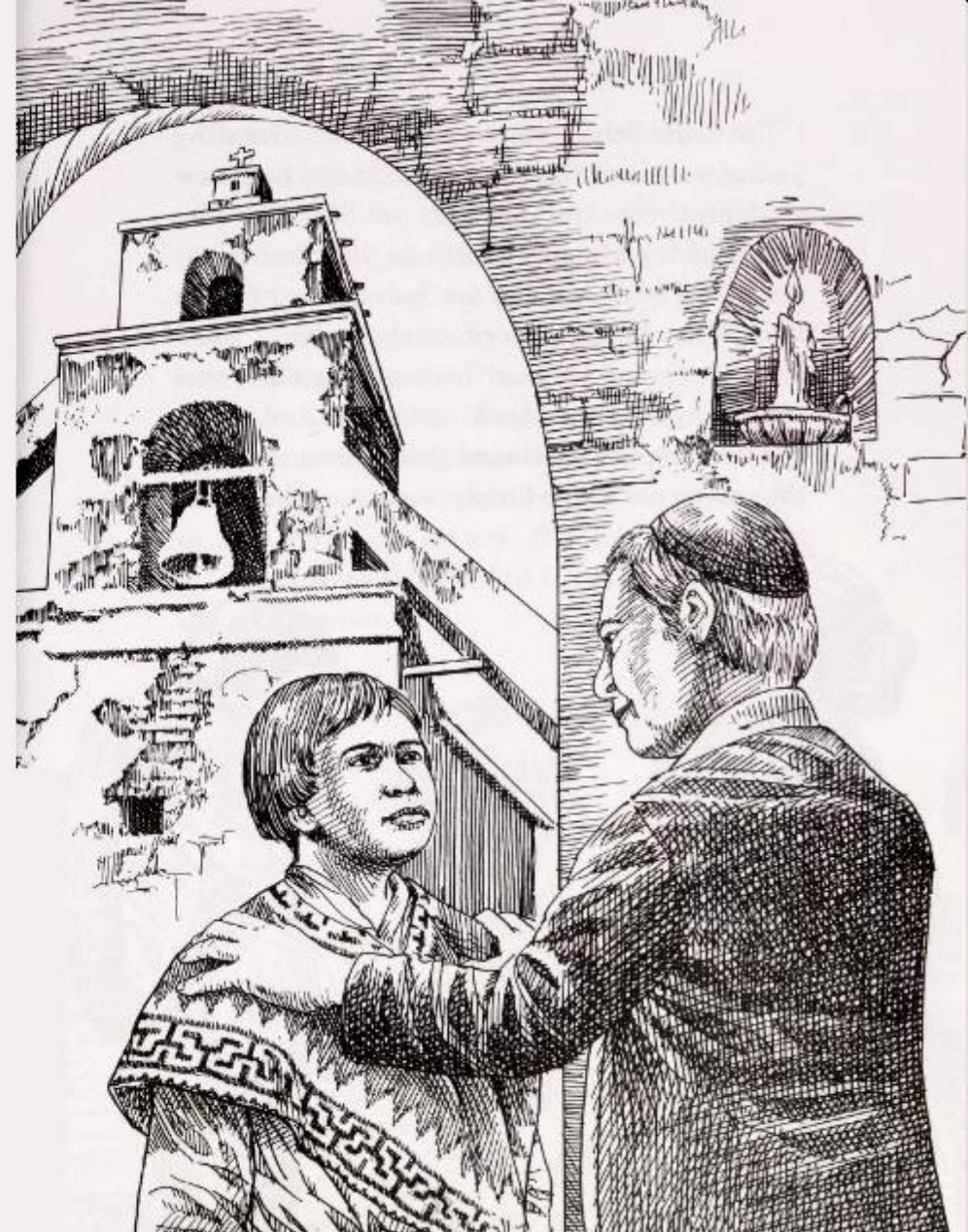
रॉयल स्कूल अच्छी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था, और अब बेनिटो वहाँ का नया उत्साही छात्र था। लेकिन जल्द ही उसे पता चला कि स्कूल में दो अलग-अलग वर्ग थे - एक मूल निवासी (नेटिव) अमेरिकी लड़कों के लिए और दूसरा स्पेनिश और क्रियोल लड़कों के लिए। अमेरिकी मूल-निवासी वर्ग के पास एक भी नियमित शिक्षक नहीं था। एक अप्रशिक्षित सहायक शिक्षक ही कक्षा को पढ़ाता था। जब बेनिटो या उसके सहपाठी कोई गलती करते तो मदद की बजाए उन्हें सजा दी जाती थी।

वर्षों बाद, बेनिटो जुआरेज ने याद किया, "मैं पढ़ाई की इस खराब पद्धति से बहुत निराश था। चूँकि जिस शहर में मैं था, वहाँ कोई अन्य प्रतिष्ठान नहीं था, इसलिए मैंने निश्चित रूप से स्कूल छोड़ने का फैसला किया। उसके बाद मैंने अपने आप से बहुत कुछ सीखा। मैं चाहता था कि मैं अपने विचारों को लिखित रूप में व्यक्त कर सकूं।”

फिर बेनिटो ने खुद व्याकरण, वर्तनी आदि सीखने में कई घंटे बिताए। उसने डॉन एंटोनियो के पुस्तकालय में देर रात तक अध्ययन किया। पर बेनिटो के जीवन में सिर्फ काम-ही-काम नहीं था। वह अपने दोस्तों के साथ खूब मौज-मस्ती भी करता था।

बेनिटो और उसके दोस्तों को पड़ोस में दौड़ना, कूदना और खेल खेलना पसंद था। बेनिटो अपने दोस्तों के साथ खूब शरारत भी करता था। एक बार, उसने कुछ सिक्कों से सड़े हुए सेबों की एक टोकरी खरीदी। फिर उसने अपने दोस्तों को गोला बारूद जैसे उपयोग करने के लिए वे सड़े सेब दिए। फिर उन्हें बाज़ार में जो भी दिखा उन्होंने उस पर सड़े सेब फेंके। जब डॉन एंटोनियो को इस वारदात का पता चला तो वो आगबबूला हुए और उन्होंने बेनिटो को खूब फटकार लगाईं!

बेनिटो का एक अन्य आईडिया उससे बेहतर था। पास की एक झील के किनारे पर, एक ड्रम और दो लकड़ी के बोर्ड उपयोग करके उसने एक डाइविंग बोर्ड बनाया। पहली बार जब उसने उससे कूदने की कोशिश की, तो बेनिटो, ड्रम और बोर्ड एक-साथ पानी में डूबे! अगली बार जब उसने अच्छा काम किया, तब बेनिटो ने अन्य गोताखोरों को डाइविंग बोर्ड का उपयोग करने के लिए टिकट लगाया। उससे बेनिटो कुछ सिक्के कमा लेता था। उन पैसों से वो एक कैंडी खरीदकर उसे अपने दोस्तों के साथ मिलकर खाता था।

21 अक्टूबर, 1821 को पंद्रह वर्षीय बेनिटो, ओक्साका के धार्मिक स्कूल (सेमिनरी) में दाखिल हुआ। अगले चार वर्षों में उसने स्पेनिश और लैटिन में महारत हासिल की। अगस्त 1825 में, उसे "एक्सीलेंट" यानि सर्वश्रेष्ठ ग्रेड मिला। लेकिन बेनिटो जुआरेज वहां नहीं रुका। उसने दर्शनशास्त्र, कला, धर्म और साहित्य के उन्नत अध्ययन के लिए सेमिनरी में अपनी पढ़ाई जारी रखी।

जैसे-जैसे जुआरेज ने अधिक और उच्च अध्ययन किया, वैसे-वैसे उसके दिमाग में एक नई योजना ने आकार लिया। पुजारी बनने के बजाए, उसने सरकार में सक्रिय होकर अपने लोगों की सेवा करने का फैसला किया। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए, जुआरेज ने सेमिनरी की पढ़ाई पूरी की और फिर ओक्साका के कला और विज्ञान संस्थान के लॉ (कानून) स्कूल में दाखिला लिया।

तीन साल की गहन स्कूली शिक्षा के बाद, बेनिटो जुआरेज संस्थान में सहायक प्रोफेसर बना। उन्हें ओक्साका नगर परिषद के लिए भी चुना गया। यह उनके राजनीतिक जीवन की शुरुआत थी।

अगले वर्ष, 1832, जुआरेज राज्य विधानमंडल के लिए चुने गए। उनकी ख्याति पूरे क्षेत्र में फैलने लगी। जुआरेज को विचारशील, परिश्रमी और ईमानदार होने के लिए प्रशंसा मिली। हर नागरिक के लिए उचित कानूनों का समर्थन करने के लिए वो सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। उन्होंने उन कानूनों को लागू करने की भी पूरी कोशिश की।
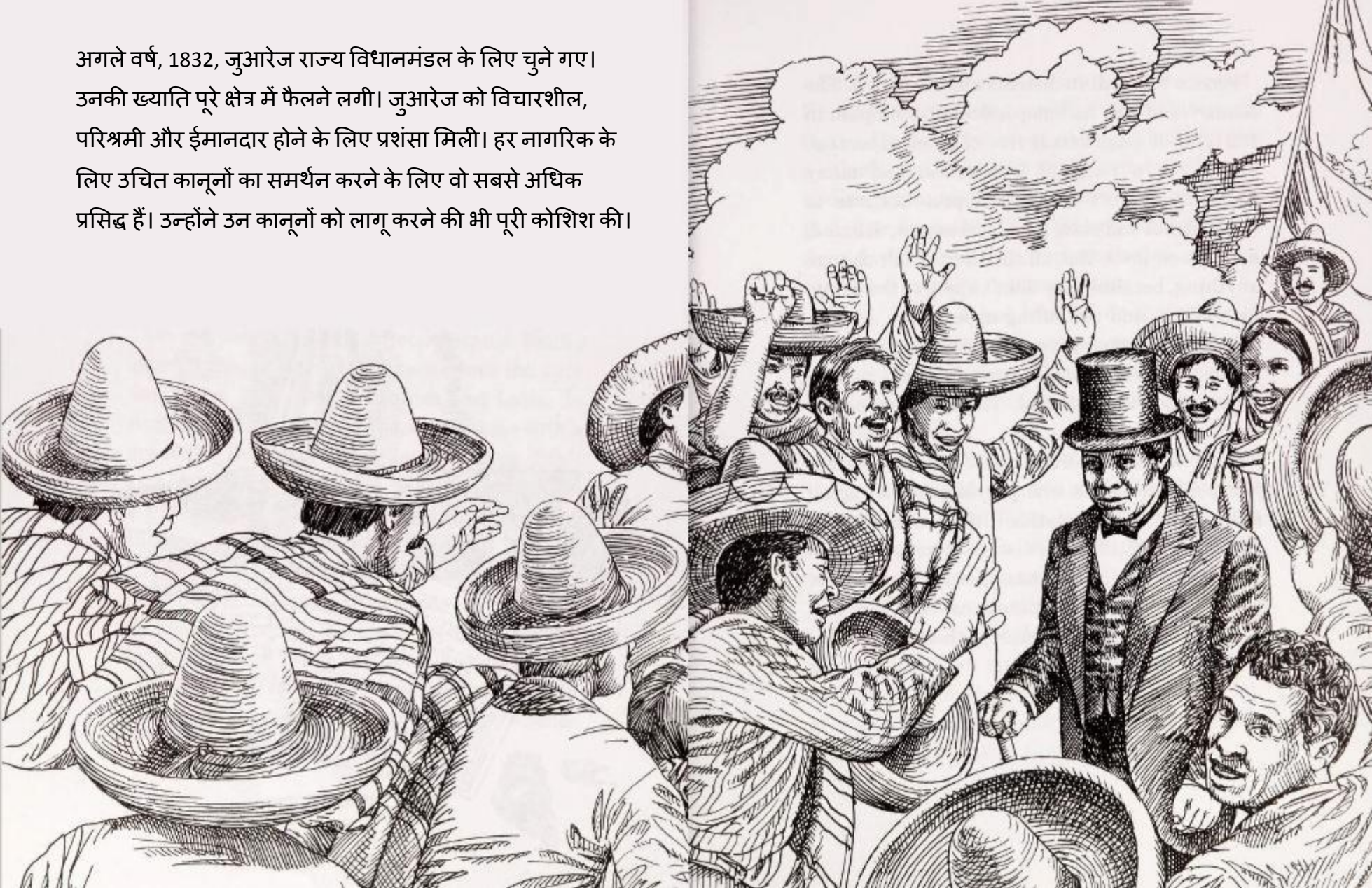
मेक्सिको अभी भी संकट और कठिनाइयों में था। 1821 में मेक्सिको ने स्पेन से अपनी स्वतंत्रता जीत ली थी, लेकिन वो वास्तव में स्पेनिश नियंत्रण से मुक्त नहीं था। वहां एक राष्ट्रीय विधायिका थी, और कई राज्य विधानसभाएँ भी थीं। राष्ट्रीय और राज्य विधानसभाओं के प्रतिनिधि मिलकर, बहस करके कानून पारित करते थे। लेकिन उन कानूनों से कुछ भी नहीं बदला था, क्योंकि वे कानून, सेना, चर्च और सत्तारूढ़ उच्च वर्ग पर लागू ही नहीं होते थे।

बार-बार, स्थानीय नेताओं ने एक राज्य सरकार के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया। पर हर बार वे हारे। इससे मैक्सिकन लोग बहुत पीड़ित हुए।

इन विद्रोहों के नेताओं में से कुछ सिर्फ राजनीतिक लोग थे जिनके पास एक छोटी-मोटी सेना थी। अन्य लोग सत्ता हथियाने के चक्कर में थे। उनमें कुछ भृष्ट और चोर लोग भी थे। कुछ ऐसे भी नेता थे जिनके इरादे नेक थे। लेकिन उनके पास अपने वादों को सफल करने का कोई व्यावहारिक तरीका नहीं था।

बेनिटो जुआरेज इनमें से किसी भी ग्रुप में फिट नहीं होते थे। वह शानदार वक्ता या ग्लैमरस व्यक्ति नहीं थे। वे हमेशा साधारण, सूती कपड़े पहनते थे। वो कभी कि चमकदार बटन, रिबन या सजावट वाली रंगीन वर्दी नहीं पहनते थे। उनके पास कोई सेना नहीं थी और न ही उन्होंने कोई बड़ा वादा नहीं किया था। फिर भी, उसकी प्रतिष्ठा दिनोंदिन बढ़ती ही गई। एक वकील और जनप्रतिनिधि के रूप में, उन्होंने सिर्फ एक सवाल पूछा - वो क्या सवाल था जो लोगों के लिए सबसे ज्यादा मायने रखते थे?

जुआरेज ने खुद से पूछा - गांव के लोगों को किस चीज़ की सबसे ज़्यादा जरूरत है? उसका जवाब था - गरीबी से उबरने का मौका। लोगों को अपने खेतों को बेहतर बनाने के लिए पैसों की जरूरत थी। लोगों को अपनी फसल गांव से शहर तक पहुँचाने के लिए सड़कों की ज़रुरत थी।

जुआरेज को लगा कि मेक्सिको की समस्याओं में सड़कों का अभाव प्रमुख था। गाँवों को जोड़ने वाली सिर्फ कुछ ही सड़कें थीं जो कच्ची थीं और वो पत्थरों व कीचड़ से भरी थीं। जुआरेज, सड़कों को सुधारना चाहते थे, जिससे कि ग्रामीण, बड़े शहरों में जाकर अपनी फसल को बेंच सकें।

जुआरेज का यह भी मानना था कि मेक्सिको को एक ऐसे संविधान की आवश्यकता थी जो कानून के तहत सभी नागरिकों को समान अधिकारों की गारंटी दे। वो संयुक्त राज्य अमेरिका में लागू सभी नागरिकों के लिए सामान-अधिकार जैसे बिल के पक्ष में थे।

पूरी ज़िन्दगी, जुआरेज ने अपने आदर्शों के लिए कड़ी लड़ाई लड़ी। वो कई उच्च पदों पर आसीन रहे। उन्होंने मैक्सिको राष्ट्रीय कांग्रेस के उप-न्यायाधीश, न्याय मंत्री, ओक्साका के राज्यपाल, मुख्य न्यायाधीश और आंतरिक मंत्री के रूप में कार्य किया। फिर 1861 में, बेनिटो जुआरेज़ को मेक्सिको का राष्ट्रपति चुने गए। वो और उसकी पत्नी, मार्गारिटा (डॉन एंटोनियो माज़ा की बेटी। डॉन एंटोनियो माज़ा वो व्यक्ति थे जिन्होंने बारह साल के बेनिटो को अपने घर में शरण दी थी), राष्ट्रपति की हवेली में बड़ी सादगी से रहते थे।

जुआरेज का सफल कैरियर एक स्थिर, सीधी चढ़ाई नहीं थी। कई बार उन्होंने पूरी तरह से सरकारी सेवा छोड़ दी। सत्ताधारी भ्रष्ट, अपराधी तानाशाहों को अपनी घृणा दिखाने का उनका यह तरीका था। दो बार, इन तानाशाहों ने जुआरेज को मेक्सिको से बाहर निकाल दिया क्योंकि उन्होंने उनके कुटिल शासन में शामिल होने से इनकार कर दिया था। शायद इस कारण से लोगों ने जुआरेज को खूब प्यार और सम्मान दिया। हर बार घर लौटने पर लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया।

अमरीका में गृहयुद्ध के दौरान, बेनिटो जुआरेज, मैक्सिको के राष्ट्रपति थे। वह अब्राहम लिंकन की सरकार के एक बड़े सहयोगी थे। जुआरेज को गुलामी से सख्त नफरत थी, इसलिए उन्होंने अमरीकी कॉन्फेडेरिटी के साथ व्यापार करने से इनकार कर दिया। इससे मेक्सिको को आर्थिक रूप से काफी नुक्सान हुआ। जुआरेज के लिए सही और न्यायपूर्ण काम, पैसों से ज्यादा जरूरी था।

कुछ मैक्सिकन राजनेताओं के अन्य विचार थे। उन्हें कॉन्फेडेरिटी से सहयोगी करने में धन और शक्ति प्राप्ति का मार्ग देखा। उन्होंने उत्तरी मेक्सिको में एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित किया और कॉन्फेडरेट सेनाओं को इसे एक सुरक्षित क्षेत्र के रूप में इस्तेमाल करने दिया। जुआरेज के दुश्मनों ने कॉन्फेडरेट नेताओं से कहा, "आप कॉन्फेडेरिटी की सेना पर हमला करके फिर इस क्षेत्र में भागने और छिपने के लिए स्वतंत्र होंगे। अमेरिकी सरकार मैक्सिको की सीमा में आपका पीछा नहीं कर पाएगी। क्योंकि सीमा पार करने का मतलब होगा मेक्सिको के साथ युद्ध करना। क्योंकि सभी यूरोपीय देश मेक्सिको का साथ देंगे, इसलिए राष्ट्रपति लिंकन ऐसा कभी नहीं करेंगे।" जुआरेज के दुश्मनों को उम्मीद थी कि इस योजना से वे राष्ट्रपति जुआरेज की संवैधानिक सरकार को उखाड़ फेंकने में कामयाब होंगे।

लेकिन मैक्सिकन लोगों के समर्थन ने जुआरेज के षड्यंत्रकारियों को हराया और मैक्सिको को राष्ट्रपति लिंकन का एक मजबूत दोस्त बनाया। अमरीका के इतिहास के इस कठिन दौर में मित्रता के लिए राष्ट्रपति लिंकन ने जुआरेज का आभार व्यक्त किया।

1872 में अपनी मृत्यु तक जुआरेज मेक्सिको के राष्ट्रपति बने रहे। वह रिटायर होना चाहते थे, लेकिन लोगों ने एक ईमानदार सरकार देने के लिए उन्हें अपनी सर्वश्रेष्ठ उम्मीद के रूप में देखा। लोगों ने जुआरेज को बार-बार चुना।

राष्ट्रपति के रूप में जुआरेज ने लगातार गरीबों और अशिक्षितों के जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश की। वह बंदरगाह से मैक्सिको की राजधानी, मैक्सिको सिटी तक, रेलमार्ग बनाने में सफल रहे। उन्होंने हर बच्चे को मुफ्त शिक्षा की गारंटी देने वाले कानून के लिए लंबा और कठिन संघर्ष किया। उनके सुधारों ने सभी नागरिकों को समानता का अवसर उपलब्ध कराया। जुआरेज के नेतृत्व में आखिरकार मेक्सिको एक स्वतंत्र राष्ट्र बना, जिसमें खुद की नियति तय करने की शक्ति और क्षमता थी।

"बेनिटो जुआरेज मेक्सिको है और मेक्सिको जुआरेज है," मैक्सिको के एक प्रसिद्ध लेखक एंड्रेस इडुआर्ट ने लिखा। पहाड़ियों में जन्मा एक गरीब आदिवासी लड़का अंत में अपने देश की सबसे महान निशानी बना।

समाप्त